17 अप्रैल 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
प्रतिदिन
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ स्वामी के चार कल्याणकों से पवित्र ऐतिहासिक नगरी विदिशा में **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्म जयंती के अवसर पर आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव** बुधवार, दिनाँक 1 अप्रैल 2015 से सोमवार 6 अप्रैल 2015 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन प्रवचनसार-ज्ञानस्वभाव की विशेषता विषय पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी छिन्दवाड़ा, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित बाबूभाईजी फतेपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, मंच निर्देशक पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, ब्र.नन्हेभैया सागर, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल, श्री अनुभवजी जैन गुना के सानिध्य में शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती शोभादेवी-मोतीलालजी जैन खैरागढ को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री राहुल-प्रज्ञा जैन कोटा, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी डॉ. अशोककुमार-ऋतु जैन इन्दौर थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन श्री मुक्ति मण्डल संघ द्वारा डॉ. बासंतीबेन शाह मुम्बई, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री पदमकुमार-विकास-वैभव-वरूण पहाड़िया इन्दौर एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री कमलकुमार साकेत बड़जात्या मुम्बई ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन, जयपुर के करकमलों द्वारा किया गया।

महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत इन्द्रसभा, राजसभा,

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा -

पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा का सम्मान

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर 5000 से अधिक जनसमुदाय के मध्य **डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा एवं उनके समस्त परिवार का तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में उनके लाईफटाइम अचीवमेन्ट के लिये नागरिक अभिनन्दन किया गया।**

सम्पूर्ण सज्जित सभामंच पर जब श्री ज्ञानचंदजी का आगमन हुआ तो सभामंडप में उपस्थित समस्त जनसमूह ने अपने स्थान पर खड़े होकर, अपने हाथ हवा में लहराते हुये करतल ध्वनि करते हुये हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया।

ट्रस्ट का परिचय, उद्देश्य एवं कार्यक्रमों की रूपरेखा ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने प्रस्तुत की।

ज्ञातव्य है कि उक्त ट्रस्ट द्वारा अब तक पूर्व में भी 14 विद्वान सम्मानित किये जा चुके हैं। सम्भवत: इतिहास में प्रथम ही अवसर होगा जब किसी सम्पूर्ण विद्वत्परिवार का इसप्रकार अभिनन्दन किया गया हो।

इस समारोह की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिग.जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री अश्विनभाई मेहता, मुम्बई थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री अनिलकुमारजी सेठी बैंगलोर, श्री अजितजी बड़ौदा, डॉ. आर.के. जैन विदिशा, श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर, श्री प्रतीकभाई वस्त्रापुर अहमदाबाद, डॉ. वासन्तीबेन मुम्बई, श्रीमती शोभनाबेन मुम्बई, श्रीमहेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री नरेन्द्रजी दिल्ली, श्री मलूकचंदजी विदिशा आदि के अतिरिक्त भी अनेकों महानुभाव और उपस्थित समस्त विद्वत्जनों का समूह विशाल सभा मंच पर विराजमान था। श्री अविनाशकुमारजी टडैया एवं श्री आराध्य टडैया ने उपस्थित विशाल जनसमूह द्वारा अनवरत करतलध्वनि के बीच समस्त महानुभावों का तिलक लगाकर स्वागत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा एवं पण्डित ज्ञानचन्दजी का परिचय श्री विजयजी बड़जात्या, इन्दौर ने दिया।

उक्त सम्मान के अन्तर्गत अनेक महानुभावों द्वारा सम्पूर्ण परिवार को माल्यार्पण के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचन्दजी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी को तिलक लगाकर, शॉल ओढाकर, श्रीफल भेंटकर, नकद राशि का लिफाफा भेंटकर एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा के कार्यों एवं व्यक्तित्व की भूरी-भूरी प्रशंसा की**

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

मुम्बई पंचकल्याणक की पत्रिका

मुम्बई पंचकल्याणक की पत्रिका

सम्पादकीय –

कोई भी व्यवसाय बुरा नहीं, सोच सही होनी चाहिये

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रतिदिन दिन में अनेक बार पुराण, कुरान और बाइबिल पर हाथ रखकर सत्य बोलने की शपथ के साथ सम्पूर्णत: असत्य का सहारा लेते-लेते वे ऊब चुके थे, अन्दर से टूट चुके थे।

न जाने कितने निरपराधियों को वे जेल भिजवा कर उनके बाल-बच्चों की बद्दुआयें ले चुके थे और अपनी झूठी जीत पर मानो स्वयं ही हंस रहे हों – ऐसी नकली हंसी-हंसकर लोगों को मूर्ख बनाया करते थे।

अपनी बुद्धि के बल पर सबल कुतर्कों से अनगिनत अपराधियों को अभयदान दिला चुके थे, जो उनके किताबी कानूनों के साये में सीना ताने नगर में मारपीट, लूट-खसोट, तोड़फोड़ से लोगों को आतंकित कर अपनी दादागिरी का रौब जमाये हुए थे।

अब तक वे जवानी के जोश में होश खोकर अन्य साधारण वकीलों की दौड़ में आगे निकलने के लिए नीति-अनीति की परवाह किये बिना दौड़ रहे थे। पर विवेक जागृत होते ही इस झूठे यश और धन के लोभ की पराकाष्ठा ने अब उन्हें झकझोर दिया था, अब वे आत्मग्लानि से भर चुके थे। अत: अब वे किसी भी कीमत पर अपने बेटे को इस पाप की दलदल में नहीं फंसने देना चाहते थे।

इसी कारण उन्होंने सुदर्शन को बचपन से ही नैतिक शिक्षा और धार्मिक संस्कार दिये थे और उसे अधिकतम धार्मिक वातावरण में रखने का प्रयास किया था।

स्नातक होने के बाद जब सुदर्शन ने अपने पिताश्री से एलएल.बी. में एडमिशन लेने की अनुमति मांगी, वकालत का ही व्यवसाय करने की इच्छा प्रगट की तो उसके पिता ने उसे मार्गदर्शन देते हुए कहा –''बेटा ! क्यों न तुम पीढी-दर-पीढी चली आ रही पुरानी लीक को छोड़कर कोई नया नैतिक व्यवसाय चुन लो, कोई सीधा-सच्चा काम कर लो ? यदि मेरी सलाह मानो तो काली करतूतों को अपने दामन में छिपानेवाला यह काला कोट तुम पहनो ही नहीं। मेरी सलाह तो यही है, फिर तुम स्वयं समझदार हो और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता अब तुममें आ गई है, अत: मैं बाध्य तो नहीं करता, पर एक पिता के नाते जो कुछ कहना था, मार्गदर्शन देना था, सो दे दिया है।

सुदर्शन एक स्वतंत्र विचारक और बुद्धिमान तो था ही, साथ ही समय-समय पर पिता द्वारा प्राप्त सदाचारी संस्कारों से उसके विचार और भी परिमार्जित हो गये थे। अत: उसने पिता की पवित्र भावनाओं का सम्मान करते हुये कहा –''पापा ! यद्यपि आपके सामने 'छोटे मुँह बड़ी बात' कहते हुये मुझे संकोच होता है, पर इस विषय में समय-समय पर प्रगट हुई आपकी भावनाओं पर मैंने काफी सोचा-विचारा है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि काम कोई भला-बुरा नहीं होता, भलाई-बुराई होती है व्यक्ति के विचारों में। यदि विचार नैतिक है तो हर काम नेक है, भला है और यदि विचारों में अनैतिकता है, लोभ-लालच है, स्वार्थभावना है, परिणामों में निर्दयता व क्रूरता है, लड़ाने-भिड़ाने में ही जिसे आनन्द आता है तो वह कोई भी काम क्यों न करें, उस काम को तो बदनामी मिलनी ही है।

आप ही सोचिये न ! ढोंगी और पाखंडियों के हाथ में पड़कर पूजा-पाठ, धर्मध्यान और प्रवचन जैसे पवित्र काम भी ढोंग और पाखंड के नाम से बदनाम हो रहे हैं। इसमें काम का क्या दोष है ? केवल गलत हाथों में पड़ने से ही ये काम बदनाम हुए हैं न ? यही स्थिति वकालत की है। अन्यथा इस व्यवसाय में तो हम उल्टे सच बोलने के लिये बाध्य हैं; क्योंकि जिन्हें पुराण और कुरान की साक्षी पूर्वक सच बोलने की प्रतिज्ञा कराई जाती है, वह और उसका सलाहकार असत्य कैसे बोल सकता है या बुलवा सकता है ?

वकील का काम तो केवल इतना ही है न कि वह न्यायकर्ता और न्याय माँगने वाले के बीच दुभाषिये का काम करे और सत्य पक्ष को उजागर करने में न्यायाधीश की मदद करे ?

यह कौनसी कानून की किताब में लिखा है कि –''वकील धन बटोरने के लिये वादी-प्रतिवादियों को झूठे-सच्चे आश्वासन दे-दे कर मुकदमे लड़वाये और मनमानी फीस वसूल करे ? तथा झूठ को सच और सच को झूठ करने में अपनी शक्ति और जनता के धन का अपव्यय करे ?

अत: पापा ! मैं इसी व्यवसाय को करके यह बता देना चाहता हूँ कि वकालत का काम एक निहायत पवित्र पेशा है और यह काला कोट काली करतूतों को छिपाने का साधन नहीं, बल्कि सूरदास की उस काली कामरी का प्रतीक है, जिस पर कृष्ण भक्ति के रंग के सिवाय दूसरा रंग नहीं चढता था। अत: मेरे इस काले कोट पर भी अन्याय, अनीति, बेईमानी और धन के लालच का कोई रंग नहीं चढ सकेगा।

बस, इसी संकल्प के साथ सुदर्शन ने अपने पैतृक व्यवसाय को ही पसंद किया था। भले ही उसने अपनी पूर्व पीढी से चले आये व्यवसाय में परिवर्तन नहीं किया, पर उसमें उसने आशातीत प्रगति की। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

तथा विद्वानों के सम्मान की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि विद्वानों का सम्मान करने वाली समाज विद्वानों से समृद्ध होती है।

अन्य वक्ताओं में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, श्री अजितजी बड़ौदा एवं श्री बाबूभाई मेहता फतेहपुर प्रमुख थे।

अंत में पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा ने अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल के साथ अपने सम्बन्धों की लम्बी पारी की चर्चा की।

प्रशस्ति-पत्र का वांचन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने एवं सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया। ●

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - *(दसवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा – ***''जब 'मैं' की परिभाषा हमारे ऊपर इतना बड़ा प्रभाव डालती है तो क्या हमारे लिये यह सबसे महत्वपूर्ण और अत्यंत आवश्यक नहीं कि हम तुरन्त ही अपनी 'मैं' की दोष रहित, निर्विवाद परिभाषा, खोजें, समझें और स्थापित करें''*** अब आगे पढिये –

हमारा अपने आपको न पहिचानना और मेरी अपनी 'मैं' की परिभाषा सुनिश्चित और सुपरिभाषित न होना हमें अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में भी किस प्रकार हास्यास्पद स्थिति ला खड़ा करता है, यह हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं।

जब हम एक बस स्टॉप पर खड़े बस के आने का इन्तजार करते हैं और बस ठसाठस भरी होने के कारण बसस्टॉप पर रुकती नहीं, तब हम बड़बड़ाते हैं कि 'यह क्या है ? कुछ भी क्यों न हो, बस रुकनी तो चाहिये न।'

फिर एक बस आकर रुकती है, भरी हुई; अनेकों लोग उसमें घुसने के प्रयास में एकदूसरे को धक्का दे रहे हैं, जिसकारण कोई भी प्रविष्ट नहीं हो पा रहा है। तब हम आवाज लगाते हैं –

''आगे बढो, जल्दी करो, पीछे और भी लोग हैं, सभी को जाना है, सब लोग कबसे खड़े हैं ? अन्दर कितनी जगह पड़ी है, कोई आगे क्यों नहीं बढता है ? कंडक्टर लोगों से कहो, आगे बढें, कोई अपने स्थान से हिलता क्यों नहीं, सब सिर्फ अपनी–अपनी सोचते हैं, कोई दूसरों की क्यों नहीं सोचता है ?''

हमारे प्रयास व्यर्थ नहीं जाते हैं और किसी तरह हम एक हाथ से बस के दरवाजे का हत्था पकड़कर लटकने में सफल हो ही जाते हैं। बस ! फिर क्या ? अब एक क्षण में ही हमारे स्वर बदल जाते हैं –

हम आतुरता भरी कड़क आवाज में पुकार उठते हैं ''कंडक्टर ! घंटी क्यों नहीं मारते हो, बस चलाते क्यों नहीं ? अब और कितने लोगों को भरोगे, कोई जगह दिख रही है क्या तुम्हें ? लोग दरवाजे पर लटक रहे हैं, हम भी आदमी हैं कोई जानवर नहीं। हमसे भले तो जानवर हैं, कम से कम प्रत्येक वाहन के लिये उनकी संख्या तो निश्चित है, यहाँ तो बस ये भरते ही जाते हैं– भरते ही जाते हैं, कुछ सोचते ही नहीं। और हाँ ! अब आगे किसी स्टॉप पर बस मत रोकना, इसमें जगह ही कहाँ है ?''

ऐसा नहीं कि हमारा यह व्यवहार मात्र आज है, यही कल तक होता था, यही कल फिर होगा, कल भी यही क्रम फिर दोहराया जायेगा। बेहिचक, बेझिझक।

कभी–कभी हमारे मन में यह शिकायत पैदा होती है कि ''कोई हमारी सुनता क्यों नहीं, मानता क्यों नहीं; हम चीख रहे हैं, आवाज लगा रहे हैं, किसी पर कोई असर क्यों नहीं होता है ?''

मैं पूछता हूँ कि तुम ही कब अपनी बात पर टिकते हो, जो कोई तुम्हारी बात माने ?

आखिर कोई तुम्हारी कौनसी बात माने, पहिलेवाली या बाद वाली?

तुम्हारी कौनसी बात सत्य है, कौनसी बात अंतिम है, कौनसी बात ऐसी है जो अब कभी नहीं बदलेगी ?

पहिले तुम स्वयं तो यह तय कर लो कि तुम अपनी कौनसी बात किसी से मनवाना चाहते हो, फिर कोई सोचेगा कि तुम्हारी बात सुनी और मानी जाये या नहीं।

जिसप्रकार कोई शराबी शराब के नशे में कुछ भी प्रलाप क्यों न करता रहे, कोई उस पर ध्यान नहीं देता है; क्योंकि सब जानते हैं कि –''यह ये नहीं इसकी शराब बोल रही है, विवेक नहीं नशा बोल रहा है, नशा उतरते ही यह स्वयं बदल जायेगा, यह स्वयं ही अपनी इन बातों पर कायम नहीं रहेगा, इसलिये यह बातें ध्यान देने योग्य नहीं है।''

ठीक इसी प्रकार ***हम जो बातें अपने क्षणिक स्वार्थ से प्रेरित होकर करते हैं वे किसी पर कोई भी प्रभाव नहीं छोड़ती है, क्योंकि सभी यह जानते–समझते हैं कि ये आप नहीं, आपका क्षणिक स्वार्थ बोल रहा है और आपका स्वार्थ सिद्ध होते ही आपके विचार, वक्तव्य और व्यवहार सबकुछ बदल जायेगा। ठीक उसी शराबी की तरह।***

वाह ! क्या इज्जत कमाई है हमने। पर सही भी तो है, नशे में सिर्फ वही तो नहीं, हम सब भी तो हैं। **हम सभी ने तो अनादिकाल से महामोह की हाला का सेवन किया है और उसी के प्रभाव में झूमते हुये संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं। हमने कब अपने स्वरूप का विचार और निर्णय किया, अपने आपको जाना और पहिचाना।**

बस हमारा यही चरित्र हमें अविश्वसनीय बनाता है।

क्या हमारा यह व्यवहार हास्यास्पद नहीं ?

तब क्यों किसी को यह सब विचित्र नहीं लगता है ?

क्योंकि सब ही तो ऐसे ही हैं।

क्यों होता है हमारे व्यवहार में यह परिवर्तन; वह भी मात्र पलभर में ?

मात्र हमारी ''मैं'' की परिभाषा में परिवर्तन के कारण।

जब हम बस के इन्तजार में स्टॉप पर खड़े थे तब अपने आप को **''प्रतीक्षार्थी''** मान रहे थे इसलिये हमारी सोच हमारा व्यवहार प्रतीक्षार्थी के हित में था, बस पकड़ते ही ***हमारी ''मैं'' की परिभाषा बदल गई, तदनुरूप हमारी हैसियत बदल गई, हित बदल गए, बस में प्रविष्ट होते ही हम ''बसयात्री'' हो गये ''सवारी'' हो गए और इसलिये सोच बदल गई व व्यवहार में परिवर्तन हो गया।***

कितनी तीव्रता से होता है यह सब, हम कितनी जल्दी बदल जाते हैं; मात्र पलभर में। हमें अहसास भी नहीं होता है कि यह हमारा दोगलापन (hybridism, illegitimacy) है। यह सब हमारे साथ बार–बार घटित होता है, कदम–कदम पर, दिन–प्रतिदिन, पल–प्रतिपल।

आखिर हम बदल क्यों जाते हैं ?

क्योंकि हमारा कोई सुनिश्चित मत है ही नहीं। हमारी अपनी ही किसी भी मान्यता पर हमें विश्वास ही नहीं है। अपने स्वरूप के बारे में हमारा कोई अंतिम निर्णय ही नहीं है। न तो हमने कभी इसके महत्व को पहिचाना और न ही यह जानने–समझने का प्रयास ही किया।

आत्मकल्याण के लिये तो यह जरूरी है ही कि हम अपने स्वरूप का निर्धारण करें, अपने आप को जाने–पहिचानें किन्तु जगत में भी प्रामाणिक जीवन जीने और अनुकरणीय बनने के लिये यही जरूरी है।

अगले अंक में पढिये –''कदम–कदम पर मुझे दिये जाने वाले नाम क्यों प्रासंगिक नहीं है और ''मैं'' की परिभाषा रचने का आधार क्या होना चाहिये।

(क्रमशः)

मुम्बई पंचकल्याणक की पत्रिका

मुम्बई पंचकल्याणक की पत्रिका

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अष्टदेवियों के भक्ति नृत्य, लेजर शो द्वारा स्वप्न दर्शन एवं तृतीय काल के भोगभूमि का प्रदर्शन, जन्मकल्याणक के अवसर पर आकाश से विमान द्वारा पुष्प वृष्टि, 45 फीट का कांच से बना विशाल पालना आदि कार्यक्रम दर्शनीय रहे। दिनांक 3 अप्रैल को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अनिलकुमारजी भागचन्दजी सेठी बैंगलोर को मिला। पालना झूलन का उद्घाटन श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री डॉ. आर के जैन विदिशा एवं विजयभाई हाथरसवाले दादर, ब्रजलाल भाई हथाया ग्रान्ट रोड मुम्बई को प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में मूलनायक महावीर भगवान के भेंटकर्त्ता पण्डित ज्ञानचन्दजी प्रमोदकुमारजैन परिवार विदिशा एवं विराजमानकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी वैभव जैन दिल्ली, विधिनायक आदिनाथ भगवान के भेंटकर्त्ता श्री लालजीरामजी संजीव जैन विदिशा एवं विराजमानकर्त्ता श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ थे। भगवान शीतलनाथ की प्रतिमा के भेंटकर्त्ता श्री धर्मदासजी मनोजजी जैन ललितपुर एवं विराजमानकर्त्ता डॉ.वासंतीबेन मुक्ति मण्डल संघ मुम्बई थे।

आचार्य कुन्दकुन्द के स्टेच्यू का अनावरण श्री प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर, श्रीमद् राजचन्द्रजी के स्टेच्यू का अनावरण श्रीमती शोभनाबेन -अश्विनभाई मेहता मुम्बई एवं गुरुदेवश्री के स्टेच्यू का अनावरण श्री अनंतभाई ए. शेठ एवं श्री नेमिषभाई शांतिलाल परिवार मुम्बई द्वारा हुआ।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत श्री भरत-बाहुबली नाटक की वैराग्यमयी प्रस्तुति आयोजित हुई। सत्साहित्य में 50% की छूट भी प्रदान की गई, जिसका लाभ सभी साधर्मियों ने लिया। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 5-7 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव के महामंत्री डॉ.मुकेशजी 'तन्मय', मार्गदर्शक पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, ब्र. अमित भैया व पण्डित राकेशजी दिल्ली, संयोजक पण्डित लालजीरामजी विदिशा, श्री प्रमोदकुमारजी व डॉ. विनोदजी चिन्मय, प्रचार मंत्री डॉ.मक्खनलालजी जैन, श्री महेन्द्रजी बड़कुल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी जैन व श्री अध्यात्मप्रकाशजी जैन के अतिरिक्त विदिशा, इन्दौर, भोपाल व गुना के मुमुक्षु मण्डलों, विदिशा, उज्जैन व गुना के युवा फैडरेशन तथा महिला युवा फैडरेशन विदिशा आदि अनेक संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

सभी कार्यक्रम पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा के निर्देशन में सम्पन्न हुये।●

आध्यात्मिक कवि सम्मेलन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल द्वारा दिनांक 31 मार्च को भगवान महावीर के सन्देश एवं शिक्षाओं पर आधारित एक आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका संचालन श्रीमती सुशीला जैन अलवरवालों ने किया। इस अवसर पर श्रीमती आशा काला, प्रमिला सेठी एवं निशाजी उपस्थित थीं। कार्यक्रम में जयपुर महानगर की सभी मण्डलों की महिलाओं ने भाग लिया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार -

भा. दिगम्बर जैन महासभा के संरक्षक **सर सेठ भागचंदजी सोनी,** अजमेर लिखते हैं -

''गत त्रिदशी में स्वकुलक्रमागत परम्परा को छोड़कर वीतराग दिगम्बर धर्म में समागत श्री कानजीस्वामी की सम्यग्दर्शन-प्रधान प्रणाली वर्तमान भोगप्रधान भौतिक युग में संतप्त प्राणियों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनी है, यह प्रशंसनीय विषय है।''

सुप्रसिद्ध **सेठ राजकुमारसिंहजी कासलीवाल,** इन्दौर लिखते हैं -

''सम्वत् 2001, 2002 और 2003 में मेरे पूज्य पिताजी (सर सेठ हुकमचंदजी) विद्वत्-मंडली (पण्डित देवकीनन्दनजी, पण्डित बंशीधरजी आदि) एवं कुटुम्ब सहित सोनगढ गये थे और वहाँ के वातावरण से प्रभावित होकर उन्होंने क्रमश: प्रथम बार 25,001 रुपये, द्वितीय बार की यात्रा में 11,001 रुपये तथा तृतीय बार 35,000 रुपये अर्पण किये थे; वे सदैव सोनगढ साहित्य पढते रहते थे।

यह नि:संदेह कहा जा सकता है कि सौराष्ट्र में दिगम्बर जैन मंदिर आदि के निर्माण और सहस्रों की संख्या में दिगम्बर जैन धर्मानुयायियों की वृद्धि तथा सौराष्ट्र के बाहर देश में जगह-जगह आधुनिक वातावरण में भी आध्यात्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि की वृद्धि का श्रेय श्री कानजीस्वामी और उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व को ही है।''

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127